# काव्यप्रकाश - भाग -१

प्रस्तोता -अरुण पाण्डेय

# काव्यप्रकाश

- काव्यप्रकाश के रचयिता काश्मीरदेशीय **मम्मट** हैं।
- इनको समन्वयवादी, वाग्देवतावतार इत्यादि नामों से भी जाना जाता है।
- मम्मट का समय एकादशशताब्दी (11th A.D.) मानी जाती है।
- मम्मट के पिता का नाम **जैयट** था।
- काश्मीरी होने के कारण इन्हे **राजानक** उपाधि प्राप्त है।
- साहित्य के प्रायः सभी विषय इस ग्रन्थ में प्रतिपादित हैं।
- **शब्दव्यापारविचार** नामक एक अन्य ग्रन्थ भी मम्मट की ही रचना है।

- काव्यप्रकाश का विभाजन १० उल्लासों में है। जिनके नाम –

१- काव्यस्वरूपनिरूपण, काव्यप्रकारनिर्णय।

२ – शब्दार्थस्वरूपनिरूपण, शाब्दीव्यञ्जनाविचार ।

३ – आर्थीव्यञ्जनाविचार।

४ – उत्तम(ध्वनि) काव्य निरूपण , रसादि ध्वनिविचार।

५ – मध्यमकाव्यनिरूपण , व्यञ्जना की स्थापना।

६ – अधम(अवर) काव्यनिरूपण।

७ – दोषनिरूपण।

८ – गुणनिरूपण।

९ – शब्दालङ्कारनिरूपण।

१० – अर्थालङ्कारनिरूपण।

# काव्यप्रयोजन

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये ।
सद्यः परनिर्वृत्तये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे ॥

- ✓ मम्मट के अनुसार काव्य के ६ प्रयोजन होते हैं –

१. यशसे - कालिदासादीनामिव यशः ।

२. अर्थकृते - श्रीहर्षादेर्धावकादीनामिव धनम् ।

३. व्यवहारविदे - राजादिगतोचिताचार परिज्ञानम् ।

४. शिवेतरक्षतये – आदित्यादेर्मयूरादीनामिवानर्थनिवारणम् ।

५. सद्यः परनिवृत्तये - सकलप्रयोजनमौलिभूतं समनन्तरमेव रसास्वादन-समुद्भूतं विगलितवेद्यान्तरमानन्दम्

६. यत्काव्यं लोकोत्तरवर्णनानिपुणं कविकर्म तत् कान्तेव सरसतापादनेन आभिमुखीकृत्य रामादिवद्वर्त्तितव्यं न रावणादिवदित्युपदेशं च यथायोगं कवेः सहृदयस्य च करोतीति सर्वथा तत्र यतनीयम् ॥

# काव्यहेतु

**शक्तिर्निपुणता लोककाव्यशास्त्राद्यवेक्षणात् ।**

**काव्यज्ञशिक्षयाऽभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे ॥**

- ✓ मम्मट के अनुसार काव्य के तीन हेतु (कारण) हैं।

१ . **शक्ति** = कविप्रतिभा।

२. **निपुणता**= व्युत्पत्ति जो कि लोक अनुभव, काव्य शास्त्र आदि के अनुशीलन से प्राप्त होती है।

३. **अभ्यास** = कवि अथवा काव्यपरामर्शक के उपदेश का अनुसरण करते हुए काव्य निर्माण में प्रवृत्त होना।

- ❖ **उपरोक्त तीनों सम्मिलित होकर काव्य के हेतु हैं तीनों में से कोई एक अलग से हेतु नही माना जा सकता।**

# काव्यलक्षण

**लक्षण - तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि ।**

अन्वय – अदोषौ सगुणौ पुनः क्वापि अनलङ्कृती शब्दार्थौ तत्।

- अदोषौ – दोषरहित।
- सगुणौ – गुणयुक्त।
- अनलङ्कृती पुनः क्वापि – कहीं पर स्फुट अलंकार न हो तो भी।
- शब्दार्थौ – शब्द और अर्थ।
- तत् – काव्य।

**अर्थात्** – ऐसे शब्द और अर्थ जो दोषरहित हों, गुण (माधुर्य आदि) से युक्त हो वे काव्य कहे जाते हैं। यदि कहीं पर स्फुट अलंकार न हो तो भी वह काव्य होता है।

**जैसे –**

**यः कौमारहरः स एव हि वरस्ता एव चैत्रक्षपा-**
**स्ते चोन्मीलितमालतीसुरभयः प्रौढाः कदम्बानिलाः ।**
**सा चैवास्मि तथापि तत्र सुरतव्यापारलीलाविधौ**
**रेवारोधसि वेतसीतरुतले चेतः समुत्कण्ठते ॥**

इस काव्य में कोई अलंकार स्फुट नहीं है। रस की प्रधानता मात्र है।

# काव्यभेद

**|| उत्तमकाव्य ||**

**लक्षण - इदमुत्तममतिशयिनि व्यङ्ग्ये वाच्याद् ध्वनिर्बुधैः कथितः ||**

✓जहां पर वाच्यार्थ (मुख्यार्थ) की अपेक्षा व्यङ्ग्यार्थ अधिक चमत्कारी होता है वह ध्वनिकाव्य उत्तमकाव्य कहा जाता है |

**उदाहरण** - निःशेषच्युतचन्दनं स्तनतटं निर्मृष्टरागोऽधरो
नेत्रे दूरमनञ्जने पुलकिता तन्वी तवेयं तनुः |
मिथ्यावादिनि दूति बान्धवजनस्याज्ञातपीडागमे
वापीं स्नातुमितो गतासि न पुनस्तस्याधमस्यान्तिकम् ||

- **अत्र तदन्तिकमेव रन्तुं गतासीति प्राधान्येनाधमपदेन व्यज्यते |**

# मध्यमकाव्य

**लक्षण - अतादृशि गुणीभूतव्यङ्ग्यं व्यङ्ग्ये तु मध्यमम् ॥**

- ✓ यदि व्यङ्ग्यार्थ की अपेक्षा वाच्यार्थ ही अधिक चमत्कारी हो तो गुणीभूतव्यङ्ग्य काव्य मध्यम काव्य कहा जाता है। जैसे -

**ग्रामतरुणं तरुण्या नववञ्जुलमञ्जरीसनाथकरम्।**

**पश्यन्त्या भवति मुहुर्नितरां मलिना मुखच्छाया ॥**

उपरोक्त उदाहरण में वञ्जुल लतागृह में आने का संकेत देकर भी नही गई यह व्यंग्य गौण है , उसकी अपेक्षा वाच्यार्थ ही अधिक सुन्दर (चमत्कारयुक्त ) प्रतीत होता है।

# अधमकाव्य

**लक्षण – शब्दचित्रं वाच्यचित्रमव्यङ्ग्यं त्ववरं स्मृतम् ।**

✓व्यङ्ग्य से रहित काव्य अवर(अधम) काव्य कहा जाता है जो कि २ प्रकार का होता है ।

**१- शब्दचित्र –**

**स्वच्छन्दोच्छलदच्छकच्छकुहरच्छातेतराम्बुच्छटा-**
**मूर्च्छन्मोहमहर्षिहर्षविहितस्नानाह्निकाह्नाय वः ।**
**भिद्यादुद्यदुदारदर्दुरदरीदीर्घादरिद्रद्रुमः**
**द्रोहोद्रेकमहोर्मिमेदुरमदा मन्दाकिनी मन्दताम् ॥ ४॥**

उपरोक्त उदाहरण में कवि की गंगा की भक्ति में उतनी तन्मयता नहीं है जितनी कि शब्दों के चित्र बनाने में ।

२ – वाच्यचित्र -

विनिर्गतं मानदमात्ममन्दिराद्-
भवत्युपश्रुत्य यदृच्छयाऽपि यम् ।
ससंभ्रमेन्द्रद्रुतपातितार्गला
निमीलिताक्षीव भियाऽमरावती ॥

जिस देव-मान-मर्दन दैत्यराज हयग्रीव का यों भी अपने राजप्रसाद से बाहर निकल पडना सुन लेने से अमरावती – जिस पुर के द्वार की अर्गला देवराज इन्द्र नें भयभीत होकर गिरा दी है वह ऐसी हो गई है कि मानो आंखे बन्द किये पडी हो ।

# धन्यवादः